www.krishipravahika.com

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 1, 20-21

Article ID: 152

पपीता का एन्थ्रेक्नोज और उसका प्रबंधन

देवी दर्शन, रामेश्वर जांगु, सौरभ यादव, और प्रकाश

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना (पंजाब)

पपीता दुनिया के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का एक महत्वपूर्ण फल है। घर के बगीचों में पपीते का उपयोग सब्जी के रूप में भी किया जाता है, यह पिछल दोे दशकों के दौरान उच्च व्यवसायिक महत्व की फसल बन गई है।

आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले में उत्पादित और बैंगलोर में विपणन किए गए पपीते की किस्म ताइवान में कुल कटाई के बाद का नुकसान 25.49 प्रतिशत था, जिसमें क्षेत्र स्तर पर 1.66 प्रतिशत, 4.12 प्रतिशत की पारगमन हानि और बाजार स्तर पर 8.22 प्रतिशत और 11.49 प्रतिशत पर पकने की हानि शामिल थी। खेत स्तर पर, नुकसान मुख्य रूप से अपरिपक्व और फलों के छोटे आकार, विकृति और कटाई की चोट से होती हैं। चोट और दबाव की वजह से फलों का बाजार पर और किसानों पे बुरा प्रभाव पड़ा है।

लक्षण:-

पपीता एन्थ्रेक्नोज एक गंभीर कवक रोग है जो रोगजनक कौलेटोट्रिचम ग्लियोस्पोरियोइड्स के कारण होता है। इस रोग के बीजाणु बरसाती, उमस भरे मौसम में, वर्षा, छींटों से, पौधे से पौधे के सम्पर्क और अस्वच्छ औजारों से फैलते हैं। जब तापमान 64.77 फारनेहाइट (18.25 सेल्सीयस) के बीच होता है, तो बीजाणु का विकास और प्रसार सबसे आम होता है। बीजाणु पौधो के उतको को संक्रमित करते हैं जो गोलाकार, थोड़ा धंसा हुआ और एक से तीन सेमी व्यास में विकसित होते हैं। धीरे-धीरे घाव आपस में जुड़ जाते हैं और धब्बे के किनारों पर मायसेलिया की वृद्वि दिखाई देती है।

जानपदिक रोग-विज्ञान:-

1. हायलिन, एक कोशिका वाला, अंडाकार से तिरछा, थोड़ा घुमावदार या डम्बल के आकार का होता है।
2. कोनिडिया की लम्बाई 10-15 टीएम और चैड़ाई में 5-7 टीएम होती है।
3. कोनिडिया कि समुह गुलाबी या सामन रंग के दिखाई देते हैं।
4. उच्च तापमान 28 डिग्री सेल्सीयस और उच्च आर्द्रता इस विकार के मुख्य कारण है।
5. बीजाणुओं में अंकुरित होने के लिए मुक्त पानी होना चाहिए।

97 प्रतिशत सापेक्ष आर्द्रता से कम अंकुरण बहुत कम है।

रोग चक्र:-

1. फलों में प्रारम्भिक संक्रमण खेत से होता है।
2. यह रोग पवन जनित कोनिडिया से फैलता है।
3. कोनिडिया भी बारिश की फुहारों से फैलते है।
4. अत्यधिक नमी की स्थिति में पत्तियों पर रोग की गंभीरता बढ़ जाती है।
5. परिपक्व फलों की तुलना में अपरिपक्व फलों पर घाव अधिक धीरे-धीरे विकसित होते हैं।

प्रबंध:-

1. फलों को गर्म पानी में 20 मिनट के लिए 48 डिग्री सेल्सीयस तापमान पर डुबो कर रखना चाहिए।
2. 45 दिनों के अंतराल पर कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत या क्लोरोथालोनिल 0.2 प्रतिशत 10 से 15 दिनों के अंतराल पर या थियोफेनेट मिथाइल 0.1 प्रतिशत या मैनकोजैब 0.2 प्रतिशत के साथ 10 दिनों के अंतराल पर पत्तियों पर छिड़काव करना चाहिए।
3. बेज़िलिसोथियोसाइनेट के साथ धुआं देना तुडाई के बाद के धब्बे और सड़न को नियत्रिंत करता है।